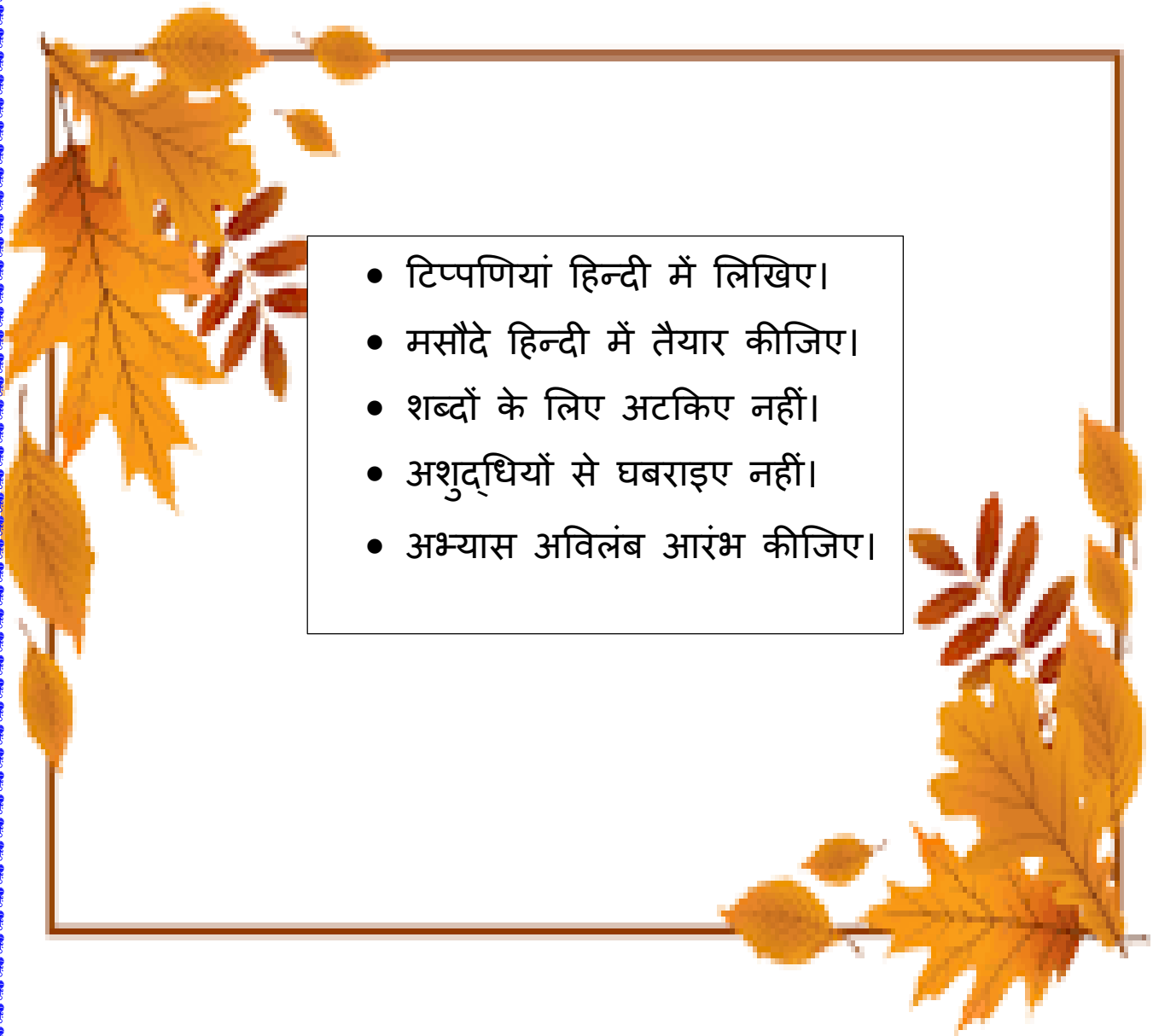




दक्षिणी

वार्षिक गृह पत्रिका
2023

महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय
दक्षिण रेलवे, चेन्नै-03

- 
- टिप्पणियां हिन्दी में लिखिए।
 - मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
 - शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
 - अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
 - अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।



अनुक्रमणिका

क्रम सं	विषय	रचनाकार (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं
1	संदेश	महानिदेशक लेखापरीक्षा	5
2	संदेश	निदेशक/प्रशा	6
3	संदेश	निदेशक/ कार्य, भंडार व यालेप	7
4	संपादक के कलम से	हिंदी अनुभाग	8
5	संसाधनों का प्रयोग	निदेशक/प्रशासन	9
6	समय की कीमत	दयाराम मीना	11
7	स्वस्थ मन सकारात्मकता का सार	मनीष कुमार तिवारी	12
8	नारी चेतना नई दिशा की ओर	प्रीति साव	13
9	भाषा और साहित्य पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव	सी.श्रीधरन	14
10	प्रकृति की सुंदरता की महिमा	मुणाल कुमार	15
11	लालची बहू की कहानी	मनीष कुमार	16
12	चींटी और टिड्डा	श्रीमती उषा नारायणन्	17
13	ज़िन्दगी के ज़ख्म	मो. हेमायुँ	18
14	ई-वेहिकल	नसीरा बेगम	19
15	कुछ ज्ञान की बातें	दीपक शर्मा	20
16	संघ की भाषा	हिंदी अनुभाग	21
17	जब तुमने कहा था वो बेटी है, वो क्या करेगी !!!	गौरव वत्स	22
18	खुदीराम बोस	श्री समीर सरकार	23
19	इंसान	गौरव श्रीवास्तव	26
20	सफल जीवन के नियम	गौरी शिवकुमार	27
21	पंच तत्व और योग मुद्रा	गीता रामु	29
22	दुनिया की 20 सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाएं	हिंदी अनुभाग	33
23	गैंगटोक (सिक्किम) का वेकेशन	डी श्रीवेंकटेशन	34

कवर पेज- कुमारी स्नेहाराज द्वारा वॉल पेंटिंग, श्री जीतेन्द्र कुमार, बकाक की पुत्री



महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय, दक्षिण रेलवे, पार्क टाउन, चेन्नै- 600 003

दक्षिणी

ई-पत्रिका

वार्षिक 2023



संरक्षक

श्रीमती अनिम चेरियन
महानिदेशक लेखापरीक्षा

श्री सि.सुरेश
निदेशक / प्रशासन

श्री एस शिव सुब्रमणियन
निदेशक / का एवं भं

पत्रिका समिति

श्रीमती जे. निर्मला
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

श्रीमती जी.वी.सूर्य प्रभा

हिन्दी अधिकारी

श्रीमती के.एस.सिमी

वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सुश्री प्रीति साव

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार होते हैं।





संदेश

यह अत्यंत गर्व की बात है कि महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय हिन्दी वार्षिक गृह पत्रिका दक्षिणी का प्रकाशन करने जा रहा है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। दक्षिणी पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से इस कार्यालय के कर्मियों को अपने अनुभव, कला और अभिव्यक्ति की सृजनात्मक प्रतिभा दिखाने का मौका प्राप्त होता है। सभी पदधारी इसका सही तरह से उपयोग कर अपनी कला को अनोखे रूप से प्रस्तुत करें।

मैं आशा करती हूँ कि दक्षिणी पत्रिका इसी प्रकार हर साल पदधारी की कला को उजागर करें और संवैधानिक दायित्वों को सजग रखते हुए अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करते रहें। संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अनिम चेरियन

महानिदेशक लेखापरीक्षा





संदेश

हमारी पत्रिका दक्षिणी का नवीन अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। एक श्रेष्ठ भारत का सूत्र राजभाषा हिंदी से निकलता है। जब हम बात करते हैं स्वतंत्र देश की, तो हिंदी का प्रभामंडल पूरे देश को प्रकाश से भर देता है। हमे अपनी देशीयता के प्रतिनिधित्व करने वाले सभी तत्वों पर गर्व करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए। इसमें अपनी मिट्टी की भाषा का स्थान, चाहे वह मातृ भाषा हो या राजभाषा, बड़ा महत्वपूर्ण है। हमारी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा में कार्यालयीन काम करने और आत्मीयता से राजभाषा से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी, जिससे राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति और निरंतरता को बनाए रखने के उद्देश्य की सार्थकता सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल संपादन और प्रकाशन के लिए मेरी मंगलकामनाएं।

(सि.सुरेश)
निदेशक/प्रशासन





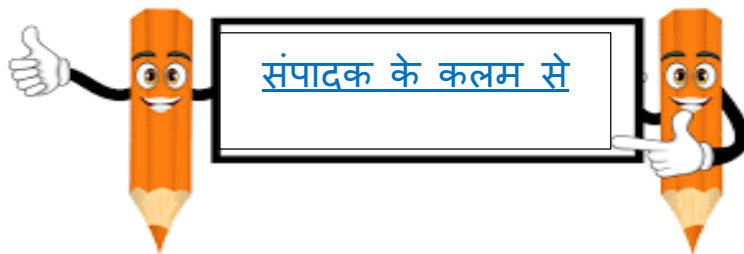
संदेश

कार्यालय पत्रिका 'दक्षिणी' का प्रकाशन मेरे लिए गौरव की बात है। भाषा एक नदी के समान है जो अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करती है। भारत की सभ्यता और भाषाई संस्कृति की जड़ें गहरी हैं। हिंदी, विश्व की उन्नत एवं वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता की पहचान है। राजभाषा के संवैधानिक उपबंधों का अनुपालन करना भी हमारा दायित्व है। कार्यालय में सहज एवं सरल भाषा में काम किया जाना आवश्यक होता है। इस मानदंड पर हिंदी हमेशा खरी उतरती है। मैं सभी रचनाकारों को धन्यवाद कहना चाहता हूँ। मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को भी धन्यवाद करना चाहता हूँ, जो अपने प्रयासों से इस पत्रिका की बेहतरी के लिए लगे रहते हैं। कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का प्रयास करें जिससे कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सके।

मैं पूर्णरूपेण आश्वस्त हूँ कि आप सभी इस प्रकार राजभाषा की प्रगति में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते रहेंगे।

(एस.शिव सुब्रमणियन)
निदेशक कार्य एवं भं





इस कार्यालय की पत्रिका 'दक्षिणी' वर्ष 2023 का वार्षिक अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रसार व प्रचार में अपना दायित्व पूरी निष्ठा से निभा रही है। मानव एक समाजिक प्राणी है और अपने विचारों को एक दूसरे से साझा करना उसका मूल गुण है, यह उसके व्यक्तित्व को भी दर्शाता है। हर व्यक्ति की सृजनात्मकता को निखारने या विचारों को कार्यालयी पदधारियों में प्रचार करने में पत्रिका भी एक अहम भूमिका निभाती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में सबको एक सूत्र में बांधने का दायित्व सिर्फ हिंदी ही निभा पाई है। इसी प्रकार, इस कार्यालय के कर्मचारियों की प्रतिभा को उजागर करने में दक्षिणी अपना कर्तव्य निभाती है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में इस कार्यालय ने महानिदेशक लेखापरीक्षा के नेतृत्व में अपना दायित्व पूरी निष्ठा से निभा रहा है। प्रशिक्षण के लिए कर्मचारियों को नामित करना हो या पदधारियों द्वारा दैनंदिन कार्य के द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हो, हम सब मिल जुल कर तत्पर रहते हैं। किसी भी कार्य में इस कार्यालय के पदधारियों ने अपना नेतृत्व दिखाने में कभी पीछे नहीं हटे। पदधारी उत्साह से अपना कार्य करते हैं।

कार्यालय के कार्यकलापों की जानकारी देने में विभागीय पत्रिका की अहम भूमिका होती है। कर्मचारियों ने अपने लेखनी के माध्यम से पत्रिका को एक नया रूप देने तथा पठनीय बनाने का प्रयास किया है। हमें आशा है कि आपको पत्रिका पसंद आएगी और इसे ज्ञानवर्धक बनाने में आपके सुझाव आमंत्रित हैं। पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले सभी का हृदय से आभार।

हिन्दी अनुभाग



प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग

कम करें, पुनःउपयोग करें, रीसाइकल करें

भौगोलिक अध्ययन दर्शाती है कि जीवाश्म ईंधन का निर्माण लाखों वर्ष पूर्व हुआ है। पिछले दो शताब्दियों से मानव जाति इन जीवाश्म ईंधनों का उपयोग बड़ी आसानी से करती आ रही है। उपयोग इतनी अधिक है कि कुछ सौ वर्षों में यह संसाधन समाप्त भी हो सकती है। इसके बारे में सोचें, जीवाश्म ईंधन बनने में लाखों वर्ष लग गए लेकिन बहुत कम समय में हम इस संसाधन को समाप्त कर देंगे। मानव जाति इन दुर्लभ संसाधनों को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करने में संकोच नहीं करती। कई अन्य प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग भी मानव जाति अपने विकास और सुविधा के लिए करती है। संरक्षण और बचाने के प्रति सजग नहीं है। इस बात से उन्हें कोई चिंता नहीं है कि आने वाली पीढ़ियों की भलाई के लिए इन प्राकृतिक संसाधनों को बनाए रखने की आवश्यकता है।

आज की मानव आबादी को यह समझने की आवश्यकता है कि जिन प्राकृतिक संसाधनों का हम आनंद ले रहे हैं वे हमारे द्वारा अर्जित या निर्मित नहीं हैं, बल्कि हमारे पूर्वजों द्वारा हमारे लिए बचाए गए हैं। इसी प्रकार, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग उदारता से करना जैसे भावी पीढ़ी से इसे छीनना ।

मानव जाति संसाधनों के उपयोग को कम करती प्रतीत नहीं हो रही है । उन्हें इस बात का अहसास ही नहीं है कि हम वास्तव में संसाधनों को जरूरत से ज्यादा उपयोग कर रहे हैं। दूसरा पहलु **पुनःउपयोग** का है। तकनीकी विकास अविनाशी एवं दीर्घकालिक उपयोगी वस्तुओं को बनाने में सक्षम होनी चाहिए। लेकिन हमारी तकनीक ने हमें केवल उपयोग करना और फेंकना ही सिखाया है। हमें इस बात का अहसास नहीं है कि डिस्पोजेबल्स का उपयोग करने से यह भारी मात्रा में कचरा पैदा करती है जो धरती माँ को बुरी तरह प्रदूषित करती है। उदाहरण के लिए खानपान उद्योग को ही लें, एक साधारण विवाह समारोह में एक क्विंटल प्लास्टिक और गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरा पैदा होता है। दरअसल, प्लास्टिक के कई रूपों की अविवेकपूर्ण उपयोग ने पर्यावरण को इतना नुकसान पहुँचाया है कि प्लास्टिक के नैनो-कण धरती पर हर जगह पाए जाते हैं। यदि हम प्राकृतिक संसाधनों का कम उपयोग करना चाहते हैं, तो हमें पहले से बनाए गए वस्तुओं के उपयोग करने के तरीके खोजने चाहिए। यह केवल तभी किया जा सकता है जब हम पहले से ही उपयोग की गई और छोड़ी गई वस्तुओं को अधिक उपयोगी वस्तु में **रीसाइकल** कर सकें। जितना अधिक हम रीसाइक्लिंग के तरीके



खोजेंगे, नव निर्मित उत्पादों पर हमारी निर्भरता उतनी ही कम होगी, अंततः जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम होगा।

कोविड- 19 महामारी के दौरान मानव आबादी पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव ही एक ज्वलंत उदाहरण है। महामारी के दौरान जब हमारी सारी गतिविधियाँ स्थिर हो गयी थी तब मानव जाति को छोड़ सभी अन्य जीवित प्राणी ने उस स्थिति का आनंद लिया। जंगली जानवरों ने शहरों का रुख कर लिया वे स्वतंत्र रूप से सड़को पर घूमते पाये गये। लॉकडाउन के समय पेड़-पौधे भी प्रदूषण मुक्त हो गए। चारों तरफ हरियाली छा गई। सुनसान सड़कों पर पौधे फूलों से पल्लवित थे। इससे यह सिद्ध होता है कि मानव जाति ही प्राकृतिक संसाधनों का सबसे बड़ा विध्वंसक है। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो आवश्यकता से अधिक प्राकृतिक संसाधनों को ग्रहण करता है जबकि अन्य प्राणी आवश्यकता के अनुसार ही संसाधनों का उपभोग करती है।

प्रकृति को बचाने के लिए हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। पूरे पृष्ठ का उपयोग करने के बजाय आधे पृष्ठ का उपयोग करना, प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी को दर्शाती है। जब हम किसी जंगली जानवर के मानव बस्ती में प्रवेश करने की खबर सुनते हैं, तो हमें यह समझना चाहिए कि जंगली जानवर हमारी बस्ती में नहीं बल्कि हम उनकी बस्ती में निवास कर रहे हैं। यदि हम स्वस्थ रहना चाहते हैं और हमारे बच्चों के लिए एक स्वस्थ दुनिया बनाना चाहते हैं, तो हमें पर्यावरण अनुकूल जीवन जीना चाहिए और सभी प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। मनुष्य स्वस्थ और लम्बा जीवन की कामना करता है। कम करें, पुनःउपयोग करें, रीसाइकल करें मंत्र का गहराई से अभ्यास न केवल हमारी मदद करता है, बल्कि धरती माँ को दीर्घायु भी बनाता है।

सि.सुरेश

निदेशक / प्रशासन

ग्रीष्म ,शरद ,बरसात है, जीवन के आधार
स्वच्छ रहे पर्यावरण ,ऐसे रखो विचार।



समय की कीमत

एक सच्ची कहावत है समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते। जिसका अर्थ है समय आता है, जाता है लेकिन कभी रुकता नहीं है। समय सभी के लिए निःशुल्क है। इसे न तो बेचा जा सकता है और न ही खरीदा जा सकता है यह असीमित है, कोई भी इसे बांध नहीं सकता।



यही सभी को बांधने पर मजबूर कर देता है। संसार की कोई भी वस्तु इसे न तो हरा सकती है और न ही जिता सकती है इसलिए समय को सबसे ज्यादा ताकतवर माना गया है जो किसी को बना भी सकती है और बिगाड़ भी सकती है। समय बड़ा बलवान है, उसके सामने सभी घुटने टेक देते हैं उसे कोई हरा नहीं सकता। हम उसकी क्षमता का आकलन नहीं कर सकते क्योंकि जीतने के लिए एक पल काफी होती है और कभी-कभी पूरा जीवन लग जाता है। जीवन और मृत्यु के बीच का अन्तर भी केवल एक पल का है। हर क्षण हमारे लिए एक सुनहरा अवसर लाता है, बस जरूरत है उस अवसर को समझकर उसका सदुपयोग करने की। यदि हम समय के संकेतों को समझने में देर करते हैं तो हम अपने जीवन के सुनहरे अवसर और सबसे कीमती समय दोनों को खो सकते हैं। यही जीवन का बुनियादि सत्य है। समय पर किया गया कार्य हमेशा फलदायी होता है। जीवन अवसरों का भंडार है, इसलिए समय की कीमत को समझते हुए जीवन में समय का सही उपयोग करना चाहिए।

दयाराम मीना

बकाक

जिन्दगी को आसान नहीं,
बस खुद को मजबूत बनाना पड़ता है।
सही समय कभी नहीं आता,
बस समय को सही बनाना पड़ता है।



स्वस्थ मन सकारात्मकता का सार

एक स्वस्थ दिमाग हमेशा सकारात्मक पक्ष के बारे में सोचता है और एक कमजोर दिमाग नकारात्मक पक्ष के बारे में सोचता है। स्वस्थ दिमाग के पास हमेशा समाधान होता है, और कमजोर दिमाग के पास बहाने होते हैं। एक स्वस्थ दिमाग आपकी स्वस्थ प्रथाओं का परिणाम है- तर्कसंगत मापदंड, संस्कार, तर्कसंगत विचार और व्यवहार का संयोजन जिसमें दोनों दुनिया के तर्कों का संश्लेषण होता है। वह दुनिया जो आपके बाहर है और इंद्रियों द्वारा महसूस की जाती है और एक दूसरी दुनिया जो आपके अंदर है जहाँ सकारात्मक विचार, विश्वास, सच्चाई वफादारी और ऐसे अन्मोल रत्नों की ऊर्जा का जबर्दस्त कंपन है, जो आपकी आत्मा को रोशन कर देती है। जैसा कि श्रीमद्भगवत गीता में कहा गया है कि यदि कमजोर मन आपके पाँच इंद्रियों के नियंत्रण में होता है। तो दिमाग में जंग लग जाती है क्योंकि आप अपने दिमाग का उपयोग उत्पादक उद्देश्यों के लिए कम करते हैं और उन विचारों के प्रति अधिक सजग होते हैं जिन्हें आपकी इंद्रियां आपको देखने, सुनने, महसूस करने,



संघर्ष आदि के लिए प्रेरित करती है। पुरुषों में दिमाग की क्षमता अधिक होती है लेकिन उनमें से अधिकांश अपने दिमाग का उद्योग कूड़ादान के रूप में करते हैं जहाँ उनकी पाँच इंद्रियों से लाया गया कचड़ा जमा होता है और ये विचार पुरुषों की रचनात्मक/उत्पादक सोच को विकृत कर देता है। डर मन की कमजोरी है। लोग क्यों डरते हैं? उन्हें असफलता से डर लगता है। कोई भी काम शुरू करने से पहले उन्हें डर रहता है कि कहीं वे असफल न हो जाएं। आज भी ज्यादातर बड़े उद्यमी और सफल लोग कभी

सफल नहीं हो पाते, अगर उनमें जोखिम लेने और चुनौतियाँ स्वीकार करने का डर होता। अगर आपका खुद पर नियंत्रण नहीं है तो डर संभव है। यह स्वयं अपने प्रति कमजोर विश्वास का ही परिणाम है। हम ईश्वर में विश्वास करते हैं। श्रीमद् भगवत् गीता के अनुसार ईश्वर महान रत्नों का सागर है जिसमें आपकी ताकत, साहस, विश्वास आदि शामिल है और ईश्वर हमारी ताकत के रूप में हमारे अंदर है यदि आप उस पर विश्वास करते हैं, तो इसका मतलब है कि आप स्वयं पर विश्वास करते हैं। मनुष्य परम शक्तिशाली है उसके अंदर अपार ऊर्जा है, उसे उनका अन्वेषण और अभ्यास करना चाहिए। स्वस्थ मन समाधान ढूँढता है क्योंकि स्वस्थ मन स्वयं पर विश्वास करता है।

एक शिशु, माता-पिता द्वारा पैदा किए गए विश्वास के कारण ही वह बड़ा होता है, बैठता है, फिर चलता और अंत में दौड़ना शुरू करता है। बच्चा बाहरी दुनिया को अपने माता-पिता की नज़र से देखता है जो उसे प्रेरित करती है इसलिए वह गिरने पर भी नहीं डरता। एक सकारात्मक दिमाग कभी भी किसी चीज से नहीं डरता और विफलता को सफलता की सीढ़ी के रूप में देखता है। माया केवल कमजोर मन का ही लक्षण है।

मनीष कुमार तिवारी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



नारी चेतना नई दिशा की ओर

मनुस्मृति के वचनानुसार नारी सृष्टि की संयोजिका है। स्त्री और पुरुष दोनों ही आधी-आधी सृष्टि है। लेकिन फिर भी इस पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री के साथ हमेशा छल किया है। चाहे सीता की अग्नी परीक्षा हो या द्रौपदी का चीर हरण या आधुनिक युग में हो रहा दुर्व्यवहार, हर युग नारी की इस पीड़ा का साक्षी रहा है, वैदिक काल से वर्तमान समय तक नारी इस दुर्व्यवहार को झेलती आयी है। वैदिक काल में स्त्री का समाज पर वर्चस्व हुआ करता था। वे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी कार्यक्रमों में हिस्सा लेती थीं लेकिन विदेशी आक्रमणों और गुलामी की जंजीरों ने स्त्री की अस्मिता को नष्ट कर दिया और इस पुरुष सत्तात्मक समाज ने नारी के अस्तित्व को धूमिल किया है। स्त्रियां समाज का अनावश्यक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि पुरुषों की तरह समाज के अस्तित्व



को बनाए रखने के लिए उतनी ही अनिवार्य है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय नारी की चेतना के प्रवाह में नये आयाम आने लगे। वे समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगी हैं। स्त्री, नियती से जुड़े जीवन यथार्थ को सिर्फ नारी ही भोगती है। समाज की कुप्रथाओं को भोगते-भोगते वह समाज की दौड़ में काफी पीछे छूटती चली गई। वर्तमान समय में नारी ने अपनी इसी दौड़ को काफी हद तक जीत

लिया है, आज समाज के हर क्षेत्र में नारी ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं, उसकी उड़ान दुनिया देख रही है। आज की नारी अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए कर्तव्यपथ पर आगे बढ़ती जा रही है। जीवन के सभी क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित कर रही है, चाहे वह सीमा पर देश की रक्षा करना हो या संसद में अपने वक्तव्य को रखना या अपने बच्चों को शिक्षित करना, सभी रूप में नारी अपने कर्तव्य को निभा रही है। नारी शिक्षा का अधिकाधिक विकास करके ही समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है।

प्रीति साव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

तरक्कियों की दौड़ में उसी का जोर चल गया,
बना के रास्ता जो भीड़ से निकल गया।



भाषा और साहित्य पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, इंटरनेट तेजी से एक केंद्रीय सूचनात्मक माध्यम बनता जा रहा है जो हमारे सीखने, सिखाने और संचार करने के तरीके को बदल रहा है। सोशल मीडिया एक सार्वजनिक मंच प्रदान करता है जो शब्द या वर्ण गणना प्रतिबंधों के बावजूद पोस्ट, ट्वीट और टिप्पणियों के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदान की अनुमति देता है। सोशल मीडिया एक्सचेंजों की लोकप्रियता दर्शाती है कि प्रौद्योगिकी उपयोगकर्ताओं ने त्वरित सोशल मीडिया इंटरैक्शन को जीवन के एक नए तरीके के रूप में स्वीकार कर लिया है और सामग्री प्रतिबंधों से मेल खाने के लिए अपने लेखन को भी समायोजित किया है।

हालाँकि एक साहित्य समीक्षक ने निष्कर्ष निकाला कि प्रौद्योगिकी छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती है और भाषा सीखने के कौशल में सुधार करती है। इंटरनेट प्रतिबंधित ट्वीट्स और पोस्ट के माध्यम से संक्षिप्त और लगातार संचार की सुविधा प्रदान करता है। यह भी प्रशंसनीय है कि डिजिटल जानकारी के निरंतर प्रवाह ने इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का ध्यान आकृष्ट किया है। प्रौद्योगिकी के युग में जन्मी, नेट-पीढ़ी अपनेपन की भावना विकसित करने और लोकप्रिय गतिविधियों से चूकने के डर से निपटने के लिए त्वरित सोशल मीडिया एक्सचेंजों के माध्यम से साथियों के साथ जुड़ने में विशेष रूप से कुशल है। उदाहरण के लिए, नेट-पीढ़ी अपने स्कूल के काम को प्रतिबंधित करने के साथ-साथ सोशल मीडिया की जांच करना, वेबसाइट ब्राउज़ करना, ईमेल पढ़ना, त्वरित संदेश भेजना, संगीत सुनना और विज्ञापन देखना जैसी डिजिटल गतिविधियों को कुशलता से बहु-कार्य करती है। यह निरंतर आने वाली जानकारी सीखने और स्कूल कार्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अनुकूल नहीं है। ऑनलाइन गतिविधियों में शामिल होने का लालच छात्रों को संघर्ष कराता है और उनकी शैक्षणिक सफलता में बाधा उत्पन्न करता है। सोशल मीडिया ने सामाजिक संबंधों में क्रांति ला दी है और यह दुनिया भर के लोगों तक अप्रतिबंधित पहुंच प्रदान करता है।

इंटरनेट ने समय और स्थान की परवाह किए बिना दुनिया को जोड़ा है। प्रौद्योगिकी ने हमारे लिखने, सोचने और दूसरों के साथ संवाद करने के तरीके को प्रभावित किया है। सोशल मीडिया पर त्वरित सामाजिक इंटरैक्शन की लोकप्रियता ने हमारे संचार पैटर्न को बदल दिया है और टेक्स्ट-स्पीक को जन्म दिया है, जो नेट-पीढ़ी के संचार का मुख्य माध्यम है। शॉर्ट-हैंड में लिखने के लिए युवाओं को दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि उन्होंने शब्द गणना प्रतिबंधों का पालन करने के लिए अपनी लेखन शैली को अनुकूलित कर लिया है। टेक्स्ट स्पीक को अब अंग्रेजी भाषा की एक बोली माना जाता है और यदि बच्चे मानक अंग्रेजी और टेक्स्ट-स्पीक में संवाद कर सकते हैं तो उन्हें द्विभाषी माना जाता है।

सी श्रीधरन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



प्रकृति की सुंदरता की महिमा

प्रकृति की सुंदरता, अनुपम विलास, हरियाली से भरी, नीले आकाश।
पहाड़ों की चोटियों पर बसे बर्फ का आभास, ये सब स्वर्गीय दृश्य,
अतुल्य परिहास।



वन में खिलते फूल, रंगीन पंखों वाले पक्षी, नदी की लहरों में झूमते
मीठे मतवाले जलजीव।

देवदारों की छाव में छिपा वन्य जीव नगरी, वहां बांस के झूलते मणियों में हैं सजीव

बरसती बूंदों में जगमगाती है मिट्टी की भूषा, धरती पर बिखरते हैं मोती के दानें सा अनाज।
जहां पंखों की उड़ान निहारती है आकाश, तो फूलों की चमक रौशन करती है प्रकृति सा जहाज़।

प्रकृति की अमिट करुणा, दृश्यों की निराली माया, सर्वश्रेष्ठ शिल्पकार की दिव्य कला का है दान।
सृष्टि के इस आदर्श तथा अच्छाइयों को कैसे समझें, हम इंसान नादान।

प्रकृति की मधुरता, उजियाले से भरी रात्रि, वनवासियों का निवास, खुदाई का जोखिम।
हर पल एक नई कहानी, नगमे गाती रंगीन, प्रकृति की सुंदरता है अमर गीत सा असीम ।

इसकी सुंदरता को चाहिए रक्षा और संरक्षण, प्रकृति के संगीत का हम सदैव रखे अभिमान।
इस प्रकृति की महिमा को बनाए सबसे प्यारा गीत, वरना ये हमारे लिए बन जाएगा अतीत।

मुणाल कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



लालची बहू की कहानी

एक बार की बात है एक शहर में एक परिवार रहता था, उस परिवार में एक लड़का और उसके माँ - बाप थे। वे बहुत अमीर तो नहीं थे लेकिन उनमें प्यार बहुत था। कुछ दिनों के बाद उस लड़के की शादी हो गयी। उसकी शादी 'सलोनी' नाम की लड़की से हुई वह बहुत लालची थी। वह अपने पति को किटी पार्टी में जाने के लिए बार-बार नए कपड़े और गहने लाने को बोलती थी। उसके पति ने उसको समझाया की अपने बराबरी वालों से ही दोस्ती करनी चाहिए। अगर तुम महिने में दस बार किटी पार्टी में जाओगी, तो तुमको हर बार नए कपड़े और गहने कौन दिलाएगा। लेकिन वह अपने पति से ही झगड़ा करना शुरू कर देती थी वह बोलती थी कि अगर मैं नए कपड़े पहनकर नहीं जाऊंगी तो मेरी सहेलियाँ मेरा मजाक उड़ाएंगी। तुम ज्यादा कमाने की तो सोचते नहीं बल्कि मुझे ही रोकते रहते हो। इसके बाद वह अपनी सास के पास गयी और बोली 'माँ जी आप मुझे अपने गहने दे दीजिए'। मुझे किटी पार्टी में पहन कर जाना है। उसकी सास हैरान होकर बोली 'हमारे समय में बहू अपनी सास को गहने रखने के लिए देती थी लेकिन तुम मुझसे ही गहने मांग रही हो'। उसकी इन हरकतों से सारा परिवार दुखी था। एक दिन सलोनी की सहेली शिल्पा घर आयी। उसने सलोनी की सास से सलोनी के बारे में पूछा। उसने बताया कि सलोनी पार्टी में गयी है। शिल्पा ने सलोनी की सास से पूछा 'आप इतनी दुखी क्यों दिख रही हैं' तब उसने सारी बात बताई कि सलोनी किस तरह बार-बार नए गहने और कपड़े की डिमांड करती हैं और सारे पैसे इन पर ही खर्च कर देती है। वह शिल्पा से पूछती है कि 'ज्यादा जरूरी क्या है, रोटी या ये दिखावा,' शिल्पा ने कहा कि 'जरूरी तो रोटी ही है'। लेकिन सलोनी को ये बात समझानी होगी। सलोनी की सास ने पूछा वह कैसे?, शिल्पा ने कहा 'देखते जाइए'। शिल्पा ने अपने सारे गहने और कपड़े सलोनी के घर रख दिए और उनका सारा राशन और फर्नीचर लेकर अपने घर चली गई। जब सलोनी घर आयी तो अपने अलमारी में नए गहने और कपड़े देखकर बहुत खुश हुई। इसके बाद वह अपनी सास से पूछी 'यह किसके हैं?' तो उसकी सास बोली 'यह सब तेरे हैं तुझको अब जितना बदल कर पहनना है पहन ले'। सलोनी नए कपड़े और गहने पहन कर घर में घूमने लगी। कुछ देर के बाद जब वह रसोई में गई तो उसने देखा कि घर का सारा राशन गायब था। राशन के डिब्बों में गहने थे। वह अपनी सास से पूछी 'यह क्या है? घर का सारा राशन और फर्नीचर कहाँ गया?' उसकी सास बोली 'वह बेचकर ही तेरे लिए नए गहने और कपड़े लेकर आए हैं। अब तुम इनको ही बदल बदल कर पहनों'। सलोनी बोली 'लेकिन गहनों से पेट नहीं भरेगा खाना तो खाना ही पड़ेगा' तभी सलोनी की सहेली शिल्पा भी आ गई। उसने कहा "जब पहले तुम्हारी सास ने तुमको समझाया तब तुम नहीं मानी, इसलिए हमने यह सब किया"। अगर तुमको लगता है कि तुम्हारा पति पर्याप्त नहीं कमाता तो तुम खुद नौकरी क्यों नहीं करती। तुमको फालतू के दिखावे से बचकर अपने घर पर ध्यान देना चाहिए। अब सलोनी को अपनी गलती का एहसास हो चुका था।

शिक्षा- हमें फिजूलखर्ची से बचकर जरूरी चीजों पर ध्यान देना चाहिए।

मनीष कुमार,

डी.इ.ओ



चींटी और टिड्डा

एक बार की बात है। गर्मी का मौसम था। चींटियों का दल हमेशा की तरह अपने काम में जुटा था। तभी वहाँ नाचता, उछलता एक टिड्डा पहुँचा। टिड्डे को मस्ती करते देख चींटियों का दल उसके सामने आ गया। उसने टिड्डे को सर्दियों में होने वाली परेशानी से अवगत कराया। उसने कहा कि, “वह भी काम करे नहीं तो आनेवाले सर्दी के दिनों में उसे कुछ खाने को नहीं मिलेगा।” लेकिन टिड्डे ने उनकी एक न सुनी और वह उनका मजाक उड़ाने लगा। वह चींटियों से कहने लगा कि, “आप सभी मेरी तरह नाच गाने का आनंद उठा ले, पूरे दिन भाग दौड़ न करें।” यह सुनकर चींटियों ने कहा कि, “हम मस्ती नहीं करेंगे क्योंकि कुछ दिनों के बाद सर्दियां आले वाली हैं, और हमें भोजन इकट्ठा करना है और तुम भी ऐसा करो।” लेकिन टिड्डे ने उनकी बात न मानी। वह उन्हें कहने लगा, “अभी सर्दियां तो बहुत दूर है और तुम भी मेरी तरह मस्ती का आनंद उठाओ।” फिर कुछ दिनों बाद ठंड का मौसम आ गया अब टिड्डा नाराज हो गया। उसने ठंड की कोई तैयारी नहीं की थी। खेतों में बर्फ की चादर पड़ गयी। इधर टिड्डा भूख से व्याकुल हो गया। उसका चेहरा मुरझाने लगा। अंत में उसे चींटियों से खाना मांगना पड़ा।

सीख - हमें अपने भविष्य को ध्यान में रख कर कार्य करना चाहिए। हमेशा मेहनत करते रहना चाहिए क्योंकि मेहनत करने वाले खुश रहते हैं। आलसी लोग कामचोर टिड्डे की तरह तकलीफ उठाते हैं।

श्रीमती उषा नारायणन,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सफल और असफल लोग अपनी क्षमताओं में बहुत भिन्न नहीं होते हैं।
वे अपनी क्षमता तक पहुँचने के लिए अपनी इच्छाओं में भिन्न होते हैं।



ज़िन्दगी के ज़ख्म

ज़िन्दगी के ज़ख्म किस किस को दिखाऊं मैं
ऐसे हालात में किस किस से नज़दीकियां बढ़ाऊं मैं !

जीता हूँ इस ज़ख्म के साथ उसके बाद भी
कि जब वो मिलें कभी उसे याद दिलाऊं मैं,

न कुरेद इस ज़ख्म को इतना, कहीं ऐसा न हो
कि जाते हुए उनसे हाथ भी मिला न पाऊं मैं,

तुम्हें तो दिल्लगी लगती है, ये ज़ख्म के किस्से
अगर चाहो तो ज़ख्म की कहानी बताऊं मैं,

लेकिन फिर भी होगा हासिल क्या इससे
जो तुम न मानो तो कहाँ तक बताऊं मैं,

अच्छा रहने दो मेरी कहानी मेरे ही साथ
तुमको बता के भी फिर लांछन खुद पे लगाऊं मैं,

होती है सभी को ज़िन्दगी में कमोवेस ऐसा ही
बस फर्क यह है कि कोई बताए न पर सबको बताऊं मैं ।

मो. हेमायुँ
डी.ई.ओ./सडिका/फर

ज़िन्दगी भी गूगल सर्च की तरह है, जितना सवाल पूछते जाओगे,
समय आने पर, वह सभी का उत्तर देती जाएगी।



ई-वेहिकल/विद्युत गाड़ी का उपयोग, पर्यावरण के लिए हानी या लाभ

पिछले 3-4 वर्षों से, हम सड़कों पर ध्यानरहित हरे रंग के बोर्ड इलेक्ट्रिक वाहनों को चलते हुए देख रहे हैं। मैं उन्हें सड़क पर देखकर हैरान हूँ और कारण की तलाश कर रही हूँ कि ये इलेक्ट्रिक वाहन अचानक सड़क पर कैसे और क्यों दिख रहे हैं आइए जानते हैं इन साउण्डलेस इलेक्ट्रॉनिक वेहिकल्स के इनोवेशन के पीछे छिपे वजह को।

2015 पेरिस जलवायु शिखर सम्मेलन के बाद, राष्ट्रीय नेताओं, वैज्ञानिकों, सामाजिक और पर्यावरण कार्यकर्ताओं, यहां तक की आम जनता भी पारंपरिक वाहनों के उपयोग के बारे में शिकायत कर रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग और प्राकृतिक संसाधनों की कमी के बारे में बात कर रहे हैं। अब, दुनिया के विभिन्न देश के नेता पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं का उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों की कमी को कम करने के तरीके ढूंढ रही है।



पारंपरिक वाहन ईंधन के रूप में पेट्रोल और डीजल का उपयोग करते हैं और भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जित करते हैं जो पर्यावरण को प्रभावित करता है और ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनता है। दूसरी ओर, इलेक्ट्रिक वाहन इलेक्ट्रिक पावर पर चलते हैं जो जीवाश्म ईंधन की कमी को कम करते हैं और शोर मुक्त अनुभव प्रदान करते हैं जिससे ध्वनि प्रदूषण कम हो जाता है और हवा की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। इलेक्ट्रिक वाहनों द्वारा कार्बन उत्सर्जन नगण्य है जिसके परिणामस्वरूप तापमान और ग्लोबल वार्मिंग में कमी आती है।

कई देशों ने वाहनों के लिए जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम कर दिया है और भावी पीढ़ी के लिए हरियाली बढ़ाया है। भारत सरकार ने उत्पादकता लाइन प्रोत्साहन योजना की घोषणा किया और इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन को प्रोत्साहन प्रदान करता है। नतीजतन, आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए इलेक्ट्रिक वाहन की लागत कम हो जाती है।

यद्यपि इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन चरण में कार्बन का उत्सर्जन उच्च स्तर पर होता है, लेकिन यह उपयोग चरण के दौरान यह कम हो जाता है जिससे पर्यावरण पर बेअसर हो जाता है। इलेक्ट्रिक वाहनों के बड़े पैमाने पर उपयोग से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कम होगा और ग्लोबल वार्मिंग को स्थायी रूप से कम किया जा सकेगा।

कार्बन पदचिह्न और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए सरकार को इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन में तकनीकी प्रगति की दिशा में तत्काल आवश्यक, साहसिक और परिवर्तनकारी कदम उठाने चाहिए।

नसीरा बेगम
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



कुछ ज्ञान की बातें

1. भगवान राम की तरह माता पिता का आज्ञाकारी बनना चाहिए।
2. राजा हरिचन्द्र की तरह सत्यवादी बनना चाहिए।
3. बुद्ध की तरह प्राणियों पर दया करना चाहिए।
4. राष्ट्र और राष्ट्रीय संपत्ति का सम्मान करना चाहिए।
5. गांधी की तरह देश प्रेम करना चाहिए।
6. शिवाजी की तरह देश प्रेम करना चाहिए।
7. अपंग-दीन और गरीबों की सहायता करनी चाहिए।
8. कोयल की तरह मीठा बोलना चाहिए।
9. गलती करने पर स्वीकार करने का साहस होना चाहिए।
10. सदैव प्रसन्न रहना चाहिए।

श्री दीपक शर्मा,
बकाक

संगति आपको ऊंचा उठा
भी सकती है और यह
आपकी ऊंचाई को खत्म
भी कर सकती है।



संघ की भाषा

अनुच्छेद 120. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

- भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा
परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।
- जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो “या अंग्रेजी में” शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

अनुच्छेद 210: विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

- भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा
- जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो “ या अंग्रेजी में ” शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो :
परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले “पंद्रह वर्ष” शब्दों के स्थान पर “पच्चीस वर्ष” शब्द रख दिए गए हों :

परंतु यह और कि अरुणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले “ पंद्रह वर्ष ” शब्दों के स्थान पर “ चालीस वर्ष ” शब्द रख दिए गए हों।

हिंदी भाषा नहीं, भावों की अभिव्यक्ति है।
यह मातृभूमि पर, मर मिटने की भक्ति है।।



जब तुमने कहा था वो बेटी है , वो क्या करेगी !!!

हाँ मैं रोया था उस दिन,
जब तुमने कहा था वो बेटी है, वो क्या करेगी ।

उसके सपनों को अपने आंसुओं से धोया था उस दिन,
जब तुमने कहा था, वो बेटी है पढ़ कर क्या करेगी ।



बहुत बेबस सा महसूस किया था उस दिन,
जब उसके हिस्से के सपनों को रौंदकर अपना पल्ला झाड़ा था,
जब वो डॉक्टर बनना चाहती थी, और हमने उसे दुल्हन बनाया था,
हर पल, हर क्षण, उसकी इच्छाओं को दबाकर अपने घर की इज़्ज़त बढ़ाया था ।
तो, हाँ मैं रोया था उस दिन ।
जब तुमने कहा था वो बेटी है, वो क्या करेगी ।

मैं रोता हूँ आज भी ।
क्योंकि वो आज भी कहीं सिसक रही है,
किसी का घर बनाने की खातिर खुद किसी कोने में सिमट रही है,
किसी दरिंदे की हवस से लेकर घर वालों की इज़्ज़त का
बोझ ढोती खुद सबके इशारों पर थिड़क रही है ।

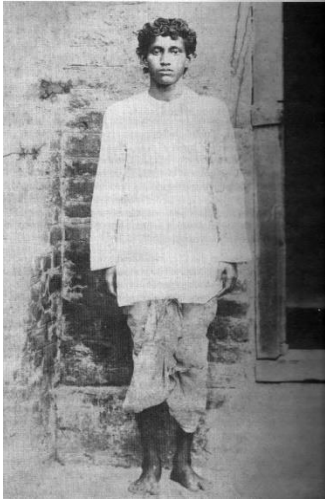
तो हाँ मैं रोता हूँ आज भी,
क्योंकि अपने इंसान होने की कीमत, वो आज भी एक लड़की होकर चुका रही है!

श्री गौरव वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तेरे आने से जो आई थी मेरे आंगन में बहार याद आती है,
तेरे नन्हे पैरों में पड़ी वो पायल की झनकार याद आती है।



मातृभूमि के लिए प्राण त्यागने वाले क्रान्तिकारी खुदीराम बोस



खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसंबर, 1889 को बंगाल में मिदनापुर जिले के हबीबपुर गांव में हुआ था। खुदीराम बोस के पिता का नाम बाबू त्रैलोक्यनाथ बोस और माता का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी थी। जब वह बहुत छोटे थे तभी उनके माता-पिता का निधन हो गया था, उनकी बड़ी बहन ने ही उनको पाला। बंगाल विभाजन (1905) के बाद खुदीराम बोस स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान किया, वे जुलूसों में शामिल होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ नारे लगाते थे। नौवीं कक्षा के बाद ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और आजादी के जंग में कूद पड़े। बाद में खुदीराम, रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने। वह वंदे मातरम् की पच्ची बांटते थे, पुलिस ने 28 फरवरी सन् 1906

को सोनार बांगला' नामक ज्वलंत पत्रिका की प्रतियाँ बांटते हुए बोस को दबोच लिया, लेकिन बोस पुलिस के शिकंजे से भागने में सफल रहे।

खुदीराम बोस का क्रान्तिकारी योगदान

जब उनके सामने जनता पर अंग्रेजों के अत्याचार होते तो, मन विद्रोह कर उठता। इन्हीं दिनों लॉर्ड कर्जन ने विश्वविद्यालय कानून बनाया और बंगाल को विभाजित कर शासन करने का निश्चय किया। दोनों आदेशों ने जनता में अचानक हलचल पैदा कर दी।

तभी चटगाँव में खबर फैली कि पुलिस इंस्पेक्टर असतुल्ला खाँ को हरिपद भट्टाचार्य ने अपनी गोली का निशाना बनाकर मार डाला। वह अंग्रेजों को खुश करने के लिए युवकों को अपने बूट की ठोकरी से मार-मारकर मूर्च्छित किया करता। नई उम्र के होनहार किशोरों को पकड़-पकड़ कर असहनीय यातनाएँ देता उनको आतंकित कर मनोबल गिराने का प्रयास करता, वह भारतीय होने के बावजूद अंग्रेज अफसर के समान आचरण करता। उनकी हत्या के समाचार ने मेदनीपुर के नवयुवकों में उत्साह की लहर फैला दी। खुदीराम बोस ने भी अपनी उम्र के सहयोगियों द्वारा इसी प्रकार के क्रान्तिकारी कारनामों के प्रति विशेष रुचि लेकर उनमें सक्रियता से जुड़ने की लालसा संजोया, उनका हृदय भी पिसतौल और गोलियों से खेलने के लिए उमड़ने लगा, जब उसके कानों में पड़ा कि अनुज सिंह गुप्त को मारने वाले को काले पानी की सजा हुई मगर वह जेल से भाग गया।

दूसरी बड़ी खबर कि बंगाल का क्रूरतम पुलिस इंस्पेक्टर को दिन दहाड़े युवक विनय कृष्ण बोस ने गोलियों से भून डाला, सहयोगी सिपाही निकट ही मरा पाया गया, विनय बोस पकड़े नहीं गये, भाग निकले। बंगाल में अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध आंदोलन जोर पकड़ने लगा। अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार कर गली-मोहल्लों के चौराहों पर उन्हें जलाया जाता, स्वदेशी चीजों के उपयोग की लोग शपथ लेते, जुलूस और सभाएँ आयोजित करते, वंदे मातरम् की धुन चारों ओर वातावरण में गूँजती। नौकरशाही आन्दोलन दबाने के लिए ताकत का भरपूर प्रयोग करने में न चूकते। निरपराधियों



को जेलों में भरा गया, बूट और बेत की मार से सम्भ्रांत बंगालियों को अपमानित करने का चलन जोरों पर था, आतंक से नया खून भयभीत न था, विचलित न था।

किंगजफोर्ड को मारने की योजना:-

बंगाल विभाजन के विरोध में लाखों लोग सड़कों पर उतरे और उनमें अनेक भारतियों को उस समय कलकत्ता के मजिस्ट्रेट किंगजफोर्ड ने क्रूर दण्ड दिया। अन्य मामलों में भी वह क्रांतिकारियों को बहुत दण्डित करता, इसके परिणामस्वरूप किंगजफोर्ड के कार्य से खुश होकर उनकी पदोन्नति कर दी और मुज़फ्फरपुर जिले का न्यायाधीश बना दिया। क्रांतिकारियों ने किंगजफोर्ड को मारने का निश्चय किया और इस कार्य के लिए चयन हुआ खुदीराम बोस और प्रफुल्लकुमार चाकी का। मुज़फ्फरपुर पहुँचने के बाद इन दोनों ने किंगजफोर्ड के बंगले और कार्यालय की निगरानी की। 30 अप्रैल 1908 को चाकी और बोस बाहर निकले और किंगजफोर्ड के बंगले के बाहर खड़े होकर उनका इंतजार करने लगे। खुदीराम ने अँधेरे में ही आने वाली बग़्गी पर निशाना लगाकर जोर से बम फेंका। हिन्दुस्तान में इस तरह के पहले बम विस्फोट की आवाज उस रात तीन मील तक सुनाई दी और कुछ दिनों बाद तो उसकी आवाज इंग्लैंड तथा योरोप में भी सुनी गयी तब वहाँ इस घटना की खबर ने तहलका मचा दिया। यँ तो खुदीराम ने किंगजफोर्ड की गाड़ी समझकर बम फेंका था, परन्तु उस दिन किंगजफोर्ड थोड़ी देर से क्लब से बाहर आने के कारण बच गया। गाड़ियाँ एक जैसी होने के कारण दो यूरोपीय स्त्रियों को अपने प्राण गँवाने पड़े। खुदीराम तथा प्रफुल्लकुमार दोनों ही रातों-रात नंगे पैर भागते हुए गये और 24 मील दूर स्थित वैनी रेलवे स्टेशन पर जाकर ही विश्राम किया। और वहाँ एक चाय वाले से पानी मांगा, पर वहाँ मौजूद पुलिस वालों को उनपर शक हो गया, बहुत मुश्किलों के बाद खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर लिया गया। 1 मई को उन्हें स्टेशन से मुज़फ्फरपुर लाया गया। उधर प्रफुल्लकुमार चाकी भी भाग-भाग कर भूख प्यास से तड़प रहे थे। 1 मई को ही त्रिगुणचर्ण नामक ब्रिटिश सरकार में कार्यरत एक आदमी ने उनकी मदद की और उसी रात को ट्रेन में बैठाया, पर रेल यात्रा के दौरान पुलिस अफसर को शक हो गया, ब्रिटिश सब-इंस्पेक्टर बनर्जी भी उसी ट्रेन में सवार थे और उसने मुज़फ्फरपुर पुलिस को इस बात की जानकारी दे दी। जब प्रफुल्लकुमार चाकी हावड़ा के लिए ट्रेन पकड़ने को मोकामाघाट उतरे तब पुलिस पहले से ही वहाँ मौजूद थी। अंग्रेजों के हाथों मरने के बजाय प्रफुल्लकुमार चाकी ने खुद को गोली मार ली और शहीद हो गये।

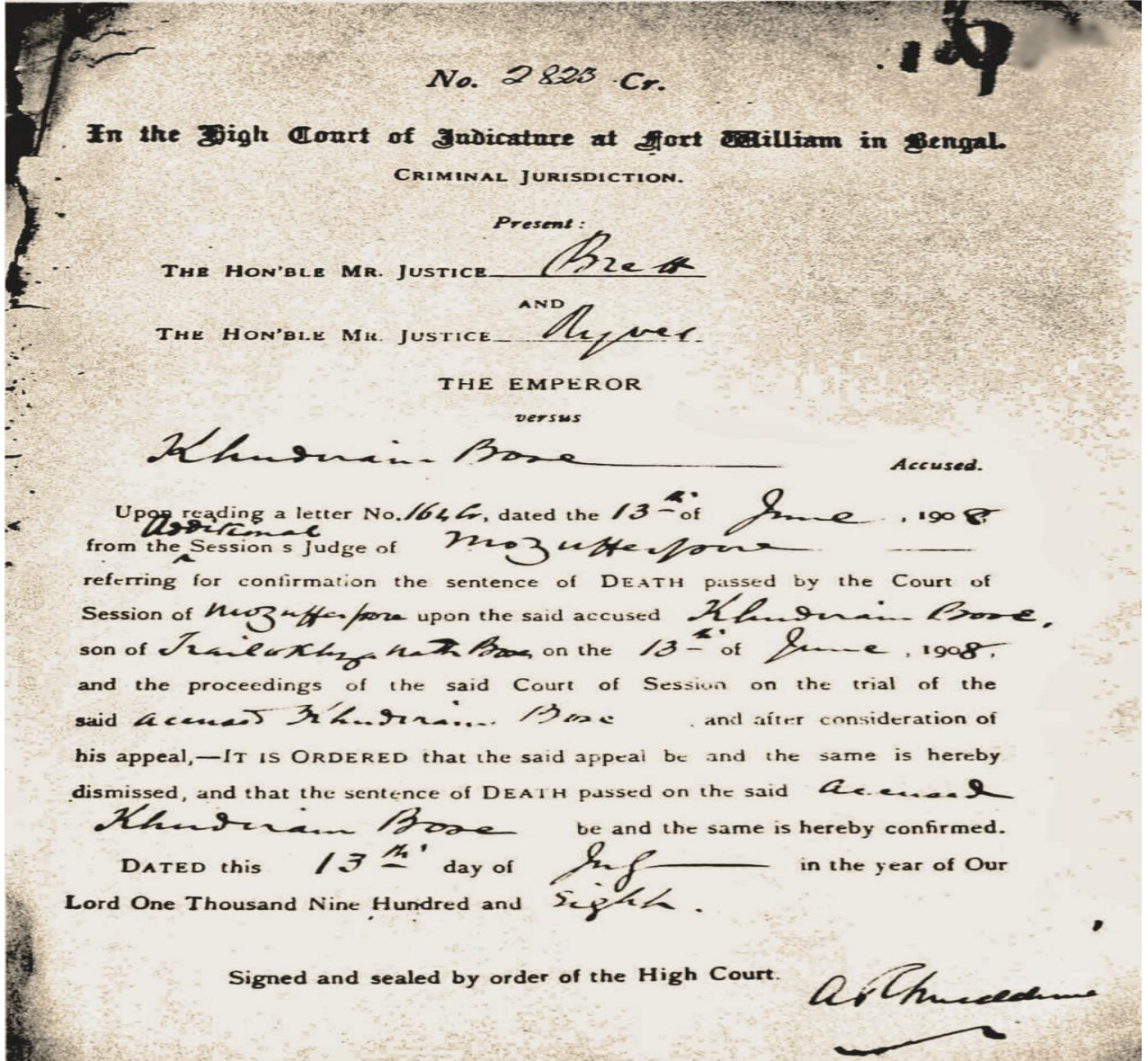
गिरफ्तारी और फाँसी:-

खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया गया और फिर फाँसी की सजा सुनाई गयी। 11 अगस्त सन् 1908 को भगवद्गीता हाथ में लेकर खुदीराम धैर्य के साथ खुशी-खुशी फाँसी चढ़ गये। उस समय उनकी उम्र मात्र 18 साल थी।

उनकी निडरता, वीरता, और शहादत ने उनको इतना लोकप्रिय कर दिया कि बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे और बंगाल के राष्ट्रवादियों और क्रांतिकारियों के लिए वे और



अनुकरणीय हो गए। उनकी फांसी के बाद विद्यार्थियों तथा अन्य लोगो ने शोक मनाया और कई दिन तक स्कूल कॉलेज बंद रहें, इन दिनों नौजवानों में ऐसी धोती का प्रचलन हो चला था जिसकी किनारो पर खुदीराम लिखा होता था। उनकी शहादत से समूचे देश में देशभक्ति की लहर उमड़ पड़ी थी। उनके साहसिक योगदान को अमर करने के लिए गीत रचे गए और उनका बलिदान लोकगीतों के रूप में मुखरित हुआ। उनके सम्मान में भावपूर्ण गीतों की रचना हुई जिन्हें बंगाल के लोक गायक आज भी गाते हैं।



खुदीराम बोस को फाँसी की सज़ा

श्री समीर सरकार,
लिपिक



इंसान

एक था भगवान, एक था शैतान
 दोनों में जब झगड़ा हुआ तो, बहुत हुआ नुकसान
 दोनों ने मिलकर निकाला समस्या का समाधान
 एक खिलौना बनाया और उसका नाम रखा इंसान
 शैतान ने अपनी ताकतें दी, क्रोध, घमंड और जलन
 भगवान ने अपने अंश दिए, प्यार, दया और सम्मान
 भगवान से मुस्कुराकर बोला शैतान, न तेरा नुकसान, न मेरा नुकसान
 तू जीते या मैं जीतू, हारेगा इंसान
 और इसलिए कहते हैं.....
 कोई टूटे तो उसे सजाना सीखो, कोई रूठें तो उसे मनाना सीखो
 रिश्ते तो मिलते हैं मुकद्दर से, बस उन्हें खूबसूरती से निभाना सीखों
 जन्म लिया है तो सिर्फ सांसें मत लीजिए, जीने का शौक भी रखिये
 शमशान ऐसे लोगों की राख से भरा पड़ा है
 जो समझते थे दुनिया उनके बिना चल नहीं सकती
 हाथ में टच फोन बस, स्टेट्स के लिए अच्छा है
 सबके टच में रहो, जिंदगी के लिए ज्यादा अच्छा है
 जिंदगी में न जाने कौन सी बात "आखरी" होगी,
 न जाने कौन सी रात "आखरी" होगी
 मिलते, जुलते, बातें करते रहो यार एक दूसरे से,
 न जाने कौन सी "मुलाकात" आखरी होगी।



गौरव श्रीवास्तव,
 वरिष्ठ लेखापरीक्षक

इंसान तो हर घर में पैदा होते हैं, परन्तु इंसानियत
 कुछ ही घरों में जन्म लेती हैं।



सफल जीवन के नियम

जीवन में सफल होने के लिए 13 कदम यहां 13 चरण दिए गए हैं जो आपको जीवन में सफल होने में मदद कर सकते हैं:

1. एक जुनून खोजें

सफल होने के लिए यह परिभाषित करना ज़रूरी है कि आप जीवन में क्या चाहते हैं।

2. प्रतिबद्धता दिखाएँ

प्रतिबद्धता का अर्थ है सफल बनने के लिए स्वयं को समर्पित करना और सभी परिस्थितियों में कड़ी मेहनत करना।

अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं और लक्ष्यों को दोस्तों या परिवार के सदस्यों के साथ साझा करें। कठिन समय में अन्य लोग आपको प्रेरित कर सकते हैं, और अन्य लोग यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप अपनी प्रतिबद्धताओं और कार्यों के लिए जवाबदेह बने रहें।



3. यात्रा से सीखें

अपनी उपलब्धियों के परिणामों पर सख्ती से ध्यान केंद्रित करने के बजाय, सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक छोटे कदमों पर ध्यान दें।

4. रास्ते में मजे करो

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आपके द्वारा उठाए गए कदमों का आनंद लेना सुनिश्चित करें।

5. सकारात्मक सोचें

सकारात्मक मानसिकता रखना और विश्वास करना महत्वपूर्ण है कि आप अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

6. अपने प्रति ईमानदार रहें

यदि आपको लगता है कि आपका लक्ष्य रुका हुआ है, तो आपको कारणों के बारे में स्वयं के प्रति ईमानदार होने की आवश्यकता हो सकती है।

7. विकर्षण दूर करें

अपने जीवन में उन चीजों की एक सूची बनाएं जो आपका समय लेती हैं या आपका ध्यान भटकाती हैं। यह कोई फ़ोन, कोई टेलीविज़न शो या यहां तक कि कोई व्यक्ति भी हो सकता है जो आपको तनाव का कारण बनता है।

8. खुद पर निर्भर रहें

आप जो कार्य कर सकते हैं उस पर ध्यान केंद्रित करके स्वयं पर निर्भर रहना महत्वपूर्ण है।



9. अधिक काम करने से बचें

अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना और बर्नआउट से बचना महत्वपूर्ण है।

10. स्मार्ट लक्ष्य बनाएं

स्मार्ट लक्ष्य एक लक्ष्य-संरचना तकनीक है जो यह सुनिश्चित करती है कि आपके पास ठोस और कार्रवाई योग्य लक्ष्य हो।

11. छोटी शुरुआत करें

हालाँकि आप महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन सरल कार्यों से शुरुआत करने से आपको उत्पादक महसूस करने में मदद मिल सकती है।

12. अच्छी आदतें बनाएँ

अच्छी आदतें बनाने से आपको लक्ष्य हासिल करने के साथ-साथ फोकस, समय प्रबंधन और विस्तार पर ध्यान देने जैसे महत्वपूर्ण कौशल सीखने में मदद मिल सकती है।

गौरी शिवकुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एशियन गेम्स 2023

भारत ने 655 एथलीटों के साथ 23 सितंबर से 8 अक्टूबर तक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के हांगझोउ में एशियन गेम्स 2023 में हिस्सा लिया।

भारत ने अपने एशियाई खेल 2023 अभियान को 107 पदकों की रिकॉर्ड संख्या के साथ समाप्त किया जिसमें 28 स्वर्ण, 38 रजत और 41 कांस्य पदक शामिल रहे।

भारत ने एथलेटिक्स में 6 स्वर्ण, 14 रजत और 9 कांस्य के साथ सबसे अधिक 29 पदक जीते। भाला फेंकने में नीरज चोपड़ा ने सफलतापूर्वक अपना खिताब डिफेंड किया।

इस बीच, तीरंदाजी कंपाउंड टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पांच स्वर्ण पदक जीते।

क्रिकेट और कबड्डी टीमों ने भी दो-दो स्वर्ण पदक अपने नाम किए, जबकि पुरुष हॉकी टीम के स्वर्ण पदक ने पेरिस 2024 ओलंपिक में अपना स्थान सुरक्षित किया।

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी-चिराग शेटी ने एशियन गेम्स 2023 में पुरुष युगल के फाइनल मैच में जीत दर्ज करके भारत के लिए एशियाई खेल में पहला बैडमिंटन स्वर्ण पदक हासिल किया।

हांगझोउ में भारत ने स्क्वैश में दो और टेनिस और घुड़सवारी में एक-एक स्वर्ण पदक जीते।

पदकों के अलावा, हांगझोउ ने 74 पेरिस 2024 ओलंपिक कोटा की पेशकश भी की जिसमें तीरंदाजी में 6, आर्टिस्टिक स्विमिंग में 10, बॉक्सिंग में 34, ब्रेकिंग में 2, हॉकी में 2, मॉडर्न पेंटाथलॉन में 10, नौकायन में 6, टेनिस में 2 और वाटर पोलो में 2 शामिल थे।

भारत ने कुल मिलाकर छह कोटा हासिल किए - बॉक्सिंग में चार (निकहत जरीन, प्रीति पवार, परवीन हुड्डा, लवलीना बोरगोहेन) और एथलेटिक्स (किशोर जेना) और पुरुष हॉकी में एक-एक।



पंच तत्व और योग मुद्रा



पंचतत्वों में मनुष्य के शरीर में पहला तत्व वायु तत्व माना जाता है। ये मनुष्य शरीर में मनुष्य की मेधा, क्रिएटिव सोच और मानसिक सेहत का प्रतीक होता है। इस तत्व का संबंध मनुष्य के चौथे चक्र यानी कि अनाहत (Anahata) से होता है।

जबकि, दूसरे तत्व को आकाश या अंतरिक्ष माना जाता है। इस तत्व को ज्यादातर इसकी विशालता के कारण निष्क्रिय ही माना जाता है।

ये तत्व योगी के शरीर की संपूर्ण चेतना का प्रतीक होता है। ये योगी का संबंध अंतरिक्ष के साथ स्थापित करने में मदद करता है। इस तत्व का संबंध पांचवें चक्र विशुद्ध (Visuddha) से माना जाता है।

तीसरे तत्व को पृथ्वी तत्व माना जाता है। ये तत्व शरीर की बाहरी या भौतिक संरचना को नियंत्रित करता है। इस तत्व का प्रभाव शरीर के ऊतकों और हड्डियों पर पड़ता है। यही तत्व शरीर में गंध को नियंत्रित करने में भी मदद करता है। पृथ्वी तत्व का संबंध प्रथम चक्र मूलाधार (Muladhara) और तीसरे चक्र मणिपूर (Manipura) से माना जाता है।

शरीर के चौथे तत्व को अग्नि तत्व कहा जाता है। ये तत्व शरीर की ग्रोथ, ग्रंथियों, मेटाबॉलिज्म और तापमान को नियंत्रित करता है। शरीर में पृथ्वी और अग्नि तत्वों को एक दूसरे का विरोधी समझा जाता है। उनके अपने अलग ऊर्जा चक्र भी होते हैं।

शरीर का पांचवां और सबसे अंतिम तत्व जल को माना जाता है। मनुष्य के शरीर का 70% हिस्सा जल से ही बना होता है। यही कारण है कि जल तत्व का प्रभाव शरीर पर सर्वाधिक होता है। ये तत्व ऊतक, जोड़, त्वचा और स्वाद को प्रभावित करता है। जल तत्व का सीधा संबंध शरीर के दूसरे चक्र स्वाधिष्ठान से माना जाता है।



प्रसन्नता एक अनमोल खजाना है,
छोटी-छोटी बातों पर उसे लूटने न दें।



1. ज्ञान मुद्रा



उद्देश्य : ज्ञान प्राप्ति के लिए, इस मुद्रा का अभ्यास उन योगियों को भी करना चाहिए जो, इस भौतिक जगत से खुद को अलग करना चाहते हैं।

अन्य नाम : वायु वर्धक मुद्रा

हस्त मुद्रा : हाथ की तर्जनी अंगुली को अंगूठे से स्पर्श करवाएं।

ज्ञान मुद्रा के फायदे :

शरीर में वायु तत्व को बढ़ाता है।

जोश, साहस और रचनात्मक सोच को बढ़ाता है।

अवचेतन मन की विचार क्षमता और स्मृति को बढ़ाता है।

ये थकान, आलस्य और मानसिक उलझनों से निपटने में बेहद कारगर है।

कब करें? : किसी भी समय।

2. वायु मुद्रा

उद्देश्य : शांति पाने के लिए

अन्य नाम : वायु शामक मुद्रा

हस्त मुद्रा : तर्जनी का पहला पोर अंगूठे के आखिरी पोर में लगाएं। अंगूठा, तर्जनी अंगुली के ऊपर रहेगा।

वायु मुद्रा के फायदे :

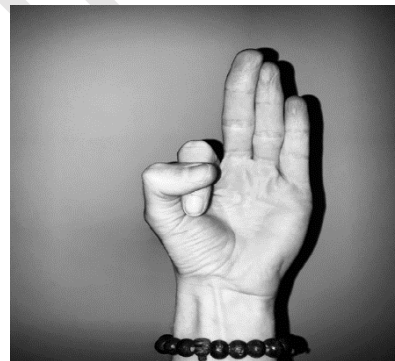
शरीर में वायु तत्व को कम करता है।

शरीर में बेचैनी और चिंता को कम करता है।

हार्मोन और नर्व्स सिस्टम की अतिसक्रियता को कम करता है।

गुस्सैल, हाइपरएक्टिव और कम एकाग्रता वालों के लिए अच्छा है।

कब करें? : किसी भी समय



उम्र थका नहीं सकती, ठोकरे गिरा नहीं सकती
अगर जिद हो जीतने की तो, हार भी हरा नहीं सकती।



3. आकाश मुद्रा



उद्देश्य : हल्केपन के लिए

अन्य नाम : आकाश वर्धक मुद्रा

हस्त मुद्रा : मध्यमा अंगुली के पोर को अंगूठे से स्पर्श करवाएं।
प्रतिदिन 30 मिनट से अधिक समय तक अभ्यास न करें।

आकाश मुद्रा के फायदे :

शरीर में आकाश तत्व को बढ़ाता है।

दिमाग में आने वाले बुरे विचारों से राहत देता है।

भय, दुख और क्रोध की भावनाओं को नियंत्रित करता है।

शरीर में मौजूद अशुद्धियों को डिटॉक्स करता है।

कब्ज और पाचन संबंधी समस्या वाले लोगों के लिए विशेष लाभदायक।

कान और सीने से जुड़ी समस्याओं में भी लाभदायक।

कब करें? : किसी भी समय, सबसे अच्छे नतीजे के लिए 2-6 am / pm अभ्यास करें।

4. शून्य मुद्रा

उद्देश्य : दर्द से राहत पाने के लिए

हस्त मुद्रा : मध्यमा अंगुली के पहले पोर को अंगूठे के बेस पर रखें और अंगूठा अंगुली के ऊपर रहेगा। किसी भी किस्म की असुविधा या दर्द अनुभव होने पर शून्य मुद्रा का अभ्यास न करें।

शून्य मुद्रा के फायदे :

शरीर में अंतरिक्ष तत्व को कम करता है।

कान में दर्द, सुनने में समस्या, यात्रा की थकान को कम करता है।

शरीर के कई अंगों जैसे, सिर और सीने में हल्के दर्द को कम करता है।

वात प्रकृति वाले लोगों के लिए बेहद फायदेमंद।

कब करें? : किसी भी समय।



5. पृथ्वी मुद्रा



उद्देश्य : शक्ति या ताकत बढ़ाने के लिए

अन्य नाम : पृथ्वी वर्धक मुद्रा या अग्नि शामक मुद्रा।

हस्त मुद्रा : अनामिका या रिंग फिंगर को अंगूठे से स्पर्श करवाएं।

पृथ्वी मुद्रा के फायदे :

शरीर में पृथ्वी तत्व को बढ़ाती है जबकि अग्नि तत्व को कम करती है।

नए टिशू की ग्रोथ को बढ़ाता है।

मसल्स बनाने और हीलिंग की प्रक्रिया को तेज करती है।

थकान से राहत देता है।

कमजोर हड्डियों, बाल और नाखूनों को मजबूती देती है।

शरीर में मजबूती, चैतन्यता और शक्ति का संचार करती है।

मेटाबॉलिक या पाचन प्रक्रिया और शरीर के तापमान को नियमित करती है।

ड्राई स्किन की समस्या को दूर करती है।

दुबले शरीर वाले लोगों में बुखार, जलन या अल्सर की समस्या को दूर करती है।

गीता रामु
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बिन गुरु नहीं होता जीवन साकार,
सिर पर होता जब गुरु का हाथ,
तभी बनता जीवन का सही आकार,
गुरु ही हैं सफल जीवन का आधार॥



दुनिया की 20 सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाएँ

क्रम सं.	भाषा	भाषा परिवार	वक्ता
1.	अंग्रेजी	इंडो -यूरोपियन	145.2 करोड़
2.	मंडारिन (मानक चीनी)	सिनो -तिब्बतीयन	111.8 करोड़
3.	हिन्दी	इंडो -यूरोपियन	60.2 करोड़
4.	स्पैनिश	इंडो-यूरोपियन	54.8 करोड़
5.	फ्रेंच	इंडो-यूरोपियन	27.41 करोड़
6.	अरबी (मानक)	अफ्रीकी -एशियाई	27.4 करोड़
7.	बंगाली	इंडो-यूरोपियन	27.27 करोड़
8.	रूसी	इंडो -यूरोपियन	25.82 करोड़
9.	पुर्तगाली	इंडो-यूरोपियन	25.77 करोड़
10.	उर्दू	इंडो -यूरोपियन	23.13 करोड़
11.	इंडोनेशियन	ऑस्ट्रोनेशियाई	19.9 करोड़
12.	जर्मन (मानक)	इंडो-यूरोपियन	13.46 करोड़
13.	जपानी	जपानिक	12.54 करोड़
14.	नाइजीरियाई पिजिन	अंग्रेजी क्रियोल	12.07 करोड़
15.	मराठी	इंडो-यूरोपियन	9.91 करोड़
16.	तेलुगु	द्रविड़	9.57 करोड़
17.	तुर्की	तुर्की	8.81 करोड़
18.	तमिल	द्रविड़	8.64 करोड़
19.	यूचीनी	सिनो-तिब्बतीयन	8.56 करोड़
20.	वियतनामी	ऑस्ट्रोएशियाटिक	8.53 करोड़

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

क्रम सं.	स्थान	वर्ष
01	बनारस, उत्तर प्रदेश	2021
02	सूरत , गुजरात	2022
03	पुणे, महाराष्ट्र	2023

संतोष एक प्राकृतिक संपदा है, जबकि विलासिता एक कृतिम निर्धनता।



गैंगटोक (सिक्किम) का वेकेशन

मैं अपने परिवार के साथ सिक्किम गैंगटोक घूमने के लिए गया था, प्रकृति के दृश्यों को देखकर चलते हुए हमारे कदम रुक जा रहे थे। गणेश टोक मंदिर के दर्शन करके जब हमलोग वापस आ रहे थे तब एक दिलचस्प व्यक्ति के साथ हमारी मुलाकात हुई। वह हमें देखकर बड़ी खुशी से हमसे बात करने लगा। वह तमिल भाषा के बारे में बात कर रहा था और तमिल में ही बात चीत कर रहा था। उसका नाम प्रभू था। उन्होंने हमें बताया कि चेन्नै के प्रसिद्ध कलाकार शिवाजी गणेशन के बेटे का नाम भी प्रभू है। वह दिलचस्प व्यक्ति चेन्नै में 17 साल रहा था इसलिए हम लोगो से तमिल भाषा में अच्छे से बातचीत कर पा रहा था हमें भी उस दिलचस्प व्यक्ति से बात करके बहुत खुशी हुई क्योंकि वह व्यक्ति नेपाली था।

डी. श्रीवेंकटेशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

चंद्रयान-3- चांद पर भारत

चंद्रयान-3 के साथ भारत चांद की सतह पर पहुंच गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी (ISRO) के वैज्ञानिक 23 अगस्त 2023 की शाम खुशी से झूम उठे। चंद्रयान-3 के लैंडर मॉड्यूल ने चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग की। 14 जुलाई को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से चंद्रयान-3 को लॉन्च किया गया। चांद पर सफल लैंडिंग के साथ ही भारत ऐसा करने वाला चौथा देश बन गया। इस कार्यालय की ओर से इसो टीम को ढेर सारे शुभकामनाएं।



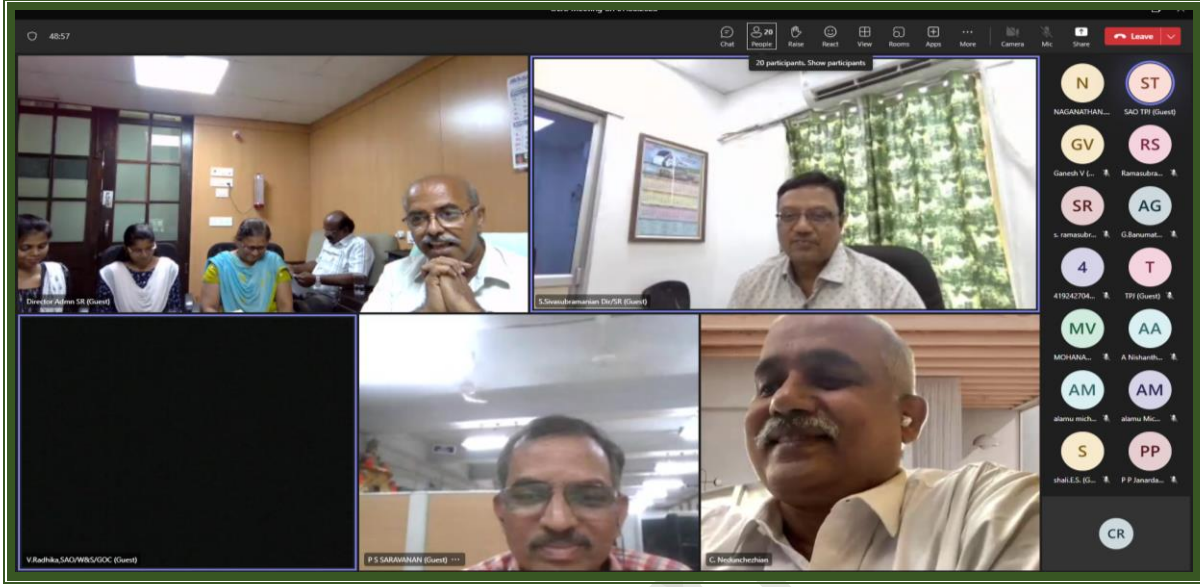


नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति
द्वारा आयोजित टिप्पण
व प्रारूप लेखन
प्रतियोगिता में प्रेरणा
पुरस्कार प्राप्त करती हुई
श्रीमती के एच मंगला,
सहायक पर्यवेक्षक

हिन्दी कार्यशाला/ अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के कुछ झलकियां



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के कुछ झलकियां



कर्म करो तो फल मिलता है, आज नहीं तो कल मिलता है,
जितना गहरा अधिक कुआँ हो, उतना मीठा जल मिलता है,
जीवन के हर कठिन प्रश्न का, जीवन से ही हल मिलता है।





वक्ताओं की ताकत है भाषा, लेखक का अभिमान है भाषा,
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी, मेरी प्यारी हिंदी भाषा।





इस कार्यालय में 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2023 तक हिंदी पखवाडा का आयोजन किया गया, जिसमें शब्दावली एवं टिप्पण लेखन, अनुवाद, अंत्याक्षरी, प्रश्नोत्तरी, स्मृति लेखन, कहानी लेखन, वार्तालाप/स्किट प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमे सभी पदधारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया और इस समारोह को सफल बनाया।





मेहनत इतनी खामोशी से करो कि, कामयाबी शोर मचा दे।





दुनिया का एक उसूल है, जबतक काम है
तब तक तेरा नाम है वरना दूर से सलाम है।





सेवानिवृत्ति



इस कार्यालय के निम्नलिखित पदधारी अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त/स्वैच्छिक सेवानिवृत्त हुए हैं। इस कार्यालय की ओर से उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करते हैं।

क्र.सं	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ती की तारीख
	सुश्री वेला	बहु कार्य कर्मचारी	
	श्री वैयालिमुत्तु	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2023
	श्री वी इलंगोवन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2023
	श्री एस अशोकन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2023
	श्री एस रामचंद्रन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2023
	श्री एस वी आनंदम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2023
	श्री जी अरुल जोति	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.04.2023
	श्रीमती एल गोमति	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2023
	श्री एम सुकुमारन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2023
	श्री एस रामकुमार	पर्यवेक्षक	31.07.2023
	श्रीमती शीला कुमारी	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2023
	श्री जे अशोकन	बहु कार्य कर्मचारी	31.08.2023
	श्री टी विक्टर सोलोमन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2023
	श्री पी मनोहरन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2023





पदोन्नति



निम्नलिखित पदधारियों की पदोन्नति पर इस कार्यालय की ओर से उन्हें ढेर सारी बधाइयां

क्र.सं	नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पदनाम
1.	सी सुरेश बाबू	लेखापरीक्षक
2.	एम बिंदु दिव्य लक्ष्मी	लेखापरीक्षक
3.	एस तमिषरसी	लेखापरीक्षक
4.	पी रंजित	लिपिक
5.	समीर सरकार	लिपिक
6.	रम्या प्रकाश	लेखापरीक्षक
7.	संजय सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/वाणिज्य
8.	के प्रदीप कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
9.	प्रीति साव	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (नई भर्ती)
10.	एन सुदर्शन प्रसाद	पर्यवेक्षक
11.	एन विश्वनाथन	सहायक पर्यवेक्षक
12.	एन मणिकण्डेश्वरन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
13.	मनवेंद्र कृष्ण	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पैसा कमाने के लिए
इतना वक्त खर्च ना करो की
पैसे खर्च करने के लिए
ज़िंदगी में वक्त ही ना मिले।





तत्कालीन महानिदेशक लेखापरीक्षा से
टेबल टेनिस खिलाड़ी श्री कल्वत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक ट्रॉफी प्राप्त करते
हुए



टेबल टेनिस कोच एवं द्रोणाचार्य पुरस्कार
से सम्मानित श्री ए श्रीनिवास राव (दस
बार वरिष्ठ राष्ट्रीय चैम्पियन बने प्रख्यात
श्री ए शरथ कमल के पिता) से प्रमाण पत्र
प्राप्त करते हुए

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग (दक्षिण जोन) विजेता 2022-23
(चेन्नै में आयोजित)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग (अंतर जोन) उपविजेता 2022-23
अहमदाबाद में आयोजित अखिल भारतीय इंटरजोन



हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची वर्ष 2023

स्थान	वार्तालाप प्रतियोगिता श्री/श्रीमती
1	रोजा प्रेमकुमार, लेप और एस गौरी, वलेप
2	मनवेन्द्र कृष्ण, सलेपअ और तमिषरसी, लेप
3	एन.मणिकण्डेश्वरन, सलेपअ और दीपक शर्मा, ब.कृ.क

स्थान	स्मृति लेखन प्रतियोगिता श्री/श्रीमती
1	एस.विवेकानंदन, ब.कृ.क
2	रोजा प्रेमकुमार, लेखापरीक्षक
3	एस. तमिषरसी, लेखापरीक्षक

स्थान	प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता श्री/श्रीमती
1	1. एस.विवेकानंदन, ब.कृ.क 2. ई .चंद्रशेखरन सलेपअ
2	1. एस.बालाजी, लेखापरीक्षक 2. सी.श्रीधरन, सलेपअ/ईडीपी
3	1. एस. तमिषरसी, लेखापरीक्षक 2. एन. सुदर्शन प्रसाद, पर्यवेक्षक

स्थान	अंत्याक्षरी प्रतियोगिता श्री/श्रीमती
1	1. एन. वेणुगोपाल, कल्याण सहायक 2. दयाराम मीना, ब.कृ.क
2	1. एस.विवेकानंदन, ब.कृ.क 2. एन. सुदर्शन प्रसाद, पर्यवेक्षक
3	1. ए.एम वैकटेशन, ब.कृ.क 2. डी.श्रीवैकटेशन, व.ले.प



छूट प्राप्त वर्ग श्री/श्रीमती			
परिणाम	शब्दावली व टिप्पणी लेखन	कहानी लेखन प्रतियोगिता	अनुवाद प्रतियोगिता
1	के.एच.मंगला, सहा.पर्य	ए.नसीरा बेगम, स.ले.प.अ	नीती वी पी, ब.कृ.क
2	ए.नसीरा बेगम, स.ले.प.अ	अलमू माइकल, व.ले.प.अ	एम.के.राजेश, सहायक पर्यवेक्षक
3	रोजा प्रेमकुमार, ले.प	---	रोजा प्रेमकुमार, ले.प

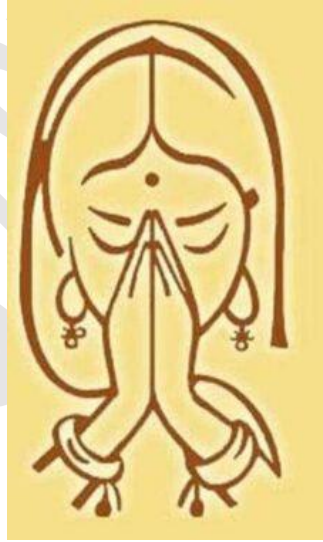
क्षेत्र "क" श्री/श्रीमती			
परिणाम	शब्दावली व टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता	कहानी लेखन प्रतियोगिता	अनुवाद प्रतियोगिता
1	मनवेन्द्र कृष्ण, स.ले.प.अ	मनवेन्द्र कृष्ण, स.ले.प.अ	मनवेन्द्र कृष्ण, स.ले.प.अ
2	मुणाल कुमार, स.ले.प.अ	समीर सरकार, लिपिक	मनीष कुमार तिवारी, स.ले.प.अ

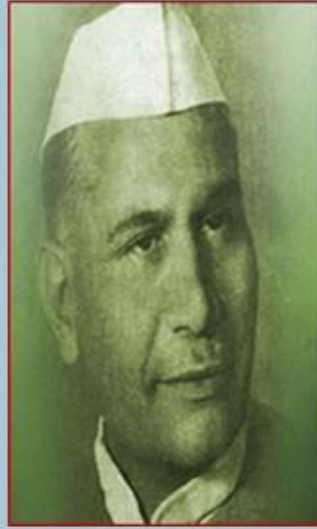
प्रशिक्षित वर्ग श्री/श्रीमती			
परिणाम	शब्दावली व टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता	कहानी लेखन प्रतियोगिता	अनुवाद प्रतियोगिता
1	पी.बी.उमा महेश्वरी, ब.कृ.क	एस. तमिषरसी, लेखापरीक्षक	बी.जयशंकर, आशु ग्रेड-1
2	बी.जयशंकर, आशु ग्रेड-1	बी.जयशंकर, आशु ग्रेड-1	एस.विवेकानंदन, ब.कृ.क
3	ए.एम.वैकटेशन, ब.कृ.क	एस. गौरी, व.ले.प	पी.बी.उमा महेश्वरी, ब.कृ.क

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।



हिंदी हमारी पहचान हमारा गर्व





सोहनलाल द्विवेदी

22 फरवरी, 1906

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ सौ बार फिसलती है ।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना नहीं अखरता है ।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।